Paper - I

Unite - 3

Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com.

Charvaka : Ethics
(चार्वाक : नीतिशास्त्र)

चार्वाक दर्शन का नैतिक विचार उसकी ज्ञानमीमांसा एवं तत्वमीमांसा पर अवलम्बित है। चार्वाक ज्ञानमीमांसा की दृष्टिकोण से प्रत्यक्षवादी है। वहीं तत्वमीमांसीय दृष्टिकोण से भौतिकवादी या जड़वादी है। ये चार भूतों से सृष्टि की रचना की व्याख्या किया है। इन्हीं भौतिक तत्वों से मानव शरीर एवं आत्मा की कल्पना की है। चार्वाक का नीतिमीमांसा इसके ज्ञानमीमांसा एवं तत्वमीमांसा पर आधारित होने के कारण भारतीय दर्शन के चार पुरुषार्थों धर्म, अर्थ काम और मोक्ष में मोक्ष और धर्म का खंडन कर अर्थ और काम पर जोर देता है। इस प्रकार से चार्वाक का नीतिशास्त्र मानव के आध्यात्मिक लक्ष्य को भौतिकवादी लक्ष्य में बदल देता है। जिसके कारण मोक्ष असम्भव बन जाता है। धर्म एक बकवास सिद्ध होता है। काम परम पुरुषार्थ बन जाता है, अर्थ इसकी प्राप्ति का साधन बन जाता है।

मोक्ष पुरुषार्थ नहीं है, इसकी उपलब्धि असम्भव है —

भारतीय दर्शन में मोक्ष दुःख निरोध की अवस्था है। मानव का परम पुरुषार्थ एवं जीवन का अंतिम लक्ष्य माना जाता है। मोक्ष का अर्थ है दुःख विनाश एवं आनन्द की प्राप्ति। आत्मा ही मोक्ष को अपनाती है। जब आत्मा ही नहीं है तो मोक्ष प्राप्ति अर्थहीन है।

Scanned with CamScanner

भारतीय दर्शन में दो प्रकार की मुक्ति की बात की गयी है। (i) जीवन मुक्ति (ii) विदेह मुक्ति। बौद्ध, जैन, सांख्य, योग, वेदान्त (शंकर) ने जीवन मुक्ति एवं विदेह मुक्ति दोनों को सत्य माना है। दूसरी ओर न्याय-वैशेषिक, मीमांसा और विशिष्टाद्वैत सिर्फ विदेह मुक्ति अर्थात मृत्यु के पश्चात मोक्ष में विश्वास करते हैं। चार्वाक मृत्यु को ही मोक्ष कहता है (मरणमेव अपवर्गः)। कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति मृत्यु की कामना नहीं कर सकता है। अतः मोक्ष को पुरुषार्थ कहना निरर्थक है।

मोक्ष का अर्थ है जीवन काल में दुःखों से छुटकारा पाना है। यह असंभव है। जब तक मानव जीवन है रोग, शोक और सांसारिक दुःखों का सामना करना पड़ेगा। इस प्रकार से जीवन काल में मोक्ष की अवधारणा निराधार है। मृत्यु के पश्चात भी मोक्ष की अवधारणा निराधार है, क्योंकि यह परलोक की अवधारणा पर आधारित है। परलोक, स्वर्ग नरक की अवधारणाएँ तर्कविरुद्ध एवं अप्रमाणिक हैं।

धर्म मानसिक बिमारी है, शास्त्र अविश्वसनीय है ⇒ भारतीय विचारधारा में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है। धर्म का प्रमाण वेद है। वेद ही प्रमाणित करता है कि क्या धर्म है क्या अधर्म है। चार्वाक दर्शन के अनुसार धर्म मूर्खतापूर्ण, मतिभ्रम, एवं एक प्रकार का मानसिक रोग है। न ईश्वर का अस्तित्व है, न नित्य आत्मा का न स्वर्ग नरक का है। धर्म एवं धार्मिक क्रियाकलाप धूर्त पंडितों का जीविका का साधन मात्र है।

चार्वाक दर्शन वेद को अविश्वसनीय मानता है। चार्वाक वेदों को भ्रष्ट धूर्त पुरोहितों की कृति मानता है जिन्होंने अज्ञानी एवं विश्वसनीय लोगों को धोखे में डालकर

Scanned with CamScanner

अपनी जीविका का प्रबन्ध किया है। वेदों में प्राप्त धर्म, अधर्म, स्वर्ग, नरक, यज्ञ और आत्मा ईश्वर परलोक आदि अतीन्द्रिय विषय जनसाधारण को धोखा देने के लिए हैं।

चार्वाक दर्शन वैदिक कर्मकाण्ड एवं यज्ञ-यागादि का घोर विरोध करता है। धार्मिक रीति-रिवाज जैसे स्वर्ग की प्राप्ति के लिए नरक से बचने के लिए तथा प्रेतात्माओं के मुक्ति के लिए वैदिक कर्मकाण्ड निरर्थक है। वे कर्मकाण्डों का विरोध करते हुए कहते हैं कि यदि ज्योतिष्टोम यज्ञ में मारा गया पशु स्वर्ग जाता है तो व्यक्ति पशुओं के जगह अपनी माँ-बाप की बली क्यों नहीं देते जिससे वे स्वर्ग चले जायेंगे। चार्वाक वैदिक श्राद्धकर्म का मजाक उड़ाते हैं। यदि श्राद्ध में अर्पित किया गया भोजन प्रेतात्मा को स्वर्ग में भूख मिटाता है तो नीचे के घर से अर्पित किया गया भोजन छत के ऊपर वाले व्यक्तियों को क्यों नहीं तृप्त करता है। मृतक व्यक्ति को भोजन खिलाना मृतक घोड़े को घास खिलाने के समान है। इस प्रकार से ब्राह्मणों ने धर्म एवं धार्मिक रीतियों का निर्माण अपने व्यावसायिक लाभ के लिए किया है।

चार्वाक ने काम को परम पुरुषार्थ एवं अर्थ को उसकी प्राप्ति का साधन माना है। चार्वाक दर्शन भारतीय परंपरा में स्वीकृत चारों पुरुषार्थों में काम को परम पुरुषार्थ मानता है। मानव मूल्यों के दृष्टि से यह भारतीय परंपरा में मौलिक एवं क्रान्तिकारी परिवर्तन है। यह प्रत्यक्षवादी ज्ञानमीमांसा, भौतिकवादी तत्त्वमीमांसा, आध्यात्मिक एवं धार्मिक मूल्यों के खंडन एवं भौतिक मूल्यों के स्वीकृति का साक्षात परिणाम है। चार्वाकों का कहना है कि जो कर्म काम की पूर्ति करे या मनुष्य को सुख प्रदान

करे नहीं उचित है। चार्वाक दर्शन में सुख के तात्पर्य ऐन्द्रिक सुख से है। उसने कहा है कि व्यक्ति द्वारा इन्द्रिय सुखों का उपभोग ही जीवन का चरम लक्ष्य है। हम सभी को यह सभी कार्य करना चाहिए जिससे इन्द्रिय सुख प्राप्त हो सके। उनका कहना है कि - जब तक जीवित रहे सुख से जीवित रहे, उधार लेकर भी पिये, क्योंकि देह के भस्म हो जाने के बाद पुनर्जन्म नहीं होता है।

यावज्जीवेत सुखं जीवेत ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः॥

चार्वाक वर्तमान सुख पर अधिक जोर देता है। भावी सुख की आशा में वर्तमान सुख को ठुकराना मूर्खता है। अध्यात्मिक सुख की आशा में शारीरिक सुख का परित्याग करना पागलपन है। चार्वाक के अनुसार अनिश्चित स्वर्ग सुख से निश्चित कौड़ी अत्यधिक मूल्यवान है। इस प्रकार से खाओ, पियो और भोग उड़ाओ यही चार्वाक का मूल सिद्धान्त है। दूसरे के धन से सुख का उपभोग करना मूर्खता है। कामिनी का आलिंगन से प्राप्त सुख ही परम सुख है। मदिरा, कामिनी और शारीरिक सुख चार्वाक सुखवाद का केन्द्रबिन्दु है। अर्थ सुख प्राप्ति का साधन है या कामपूर्ति का उपाय है। अतः वह साधन रूप में पुरुषार्थ है।

चार्वाक के नीतिशास्त्र के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि यह भारतीय दर्शन के चार पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में धर्म एवं मोक्ष का खंडन कर अर्थ एवं काम को ही पुरुषार्थ मानता है। अर्थ को भी काम प्राप्ति के साधन के रूप में पुरुषार्थ मानता है। इस प्रकार से चार्वाक दर्शन के अनुसार चरम पुरुषार्थ काम या शारीरिक सुख है। यह अवधारणा भारतीय दर्शन की आध्यात्मिक सुख के उल्टा भौतिक सुख की ओर इंगित करता है।